चेंजिंग वेज

Changing Ways

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं. HP/DMA/113

(साप्ताहिक)

❑ वर्ष 01 ❑ अंक 27 ❑ पृष्ठ : 04 ❑ मूल्य : 4 रुपये धर्मशाला, 12 सितंबर, 2016 हर सोमवार को प्रकाशित

ऐसे तो काबू नहीं आएंगे निजी शिक्षण संस्थान

निजी शिक्षण संस्थानों की मनमानी रोकने के लिए हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा दी गई व्यवस्था को लागू करना शिक्षा विभाग के लिए टेढ़ी खीर बना हुआ है। निजी स्कूल इस व्यवस्था को लागू करने में अभी आनाकानी करते नजर आ रहे हैं। शिक्षा विभाग ने अगस्त माह के अंत में सभी निजी शिक्षण संस्थानों को नोटिस जारी करके प्रदेश उच्च न्यायालय की गाइडलाइन्स के आधार पर अपने-अपने संस्थान की वेबसाइड बनानकर इसमें यह जानकारी डालने और स्कूल परिसर में बोर्ड लगाकर यह जानकारी सार्वजनिक करने के निर्देश दिए थे। अभी तक नाममात्र संस्थान ही इन पर अमल कर पाए हैं और अधिकतर ने इन आदेशों की अनदेखी ही की है। वहीं शिक्षा विभाग भी अभी तक इस बात का पता नहीं लगा पाया है कि कितने संस्थानों ने इन आदेशों का पालन किया है और कितनों ने नहीं। बताया जा रहा है कि कोर्ट के आदेशानुसार जिला स्तर पर शिक्षा विभाग के अधिकारियों की जो कमेटियां गठित की हैं, वे भी अपने विभागीय कार्यों की व्यस्तता के चलते कुकुरमुत्तों की तरह फैले निजी शिक्षण संस्थानों का निरीक्षण नहीं कर पा रही हैं। अभी तक एक कमेटी महज दो-चार स्कूलों का ही निरीक्षण कर सकी है। पाया है। प्रदेश के सबसे बड़े जिला कांगड़ा में ही अभी तक दो-तीन स्कूलों का निरीक्षण हुआ है, वहीं जिला में निजी शिक्षण संस्थानों की संख्या सैकड़ों में बताई जा रही है। जिला में निजी स्कूल ही 500 से अधिक हैं। वहीं सैकड़ों कोचिंग सेंटर और अन्य प्रकार के निजी शिक्षण संस्थान चल रहे हैं। जिस रफ्तार से निरीक्षण हो रहा है, उससे तो जिला के सभी स्कूलों के निरीक्षण के लिए कमेटी को कई महीने लग जाएंगे। ज्ञात रहे कि हिप्र. हाई कोर्ट ने 27 अप्रैल 2016 को सीडब्ल्यूपी नंबर 8789/2014 व 8781/2014, बिजनेस इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट साइंसेज बनाम

■ शेष पृष्ठ 3 पर

ये हैं कोर्ट के आदेश

कोर्ट ने *हिमाचल प्रदेश के चीफ सेक्रेटरी को निर्देश जारी करते हुए अपने फैसले में लिखा है कि वे निजी स्कूलों, कॉलेजों, कोचिंग सेंटरों, विश्वविद्यालयों और अन्य प्रकार के निजी शैक्षणिक संस्थानों में फीस स्ट्रक्चर सरकार की मंजूरी से लागू करवाने की व्यवस्था करेंगे। साथ ही मुख्य सचिव को एक कमेटी का गठन करने के आदेश जारी किए गए थे। इस कमेटी के कार्य को परिभाषित करते हुए कहा था कि यह कमेटी सभी स्तर के निजी शिक्षण संस्थानों की पड़ताल करेगी। इन निजी शिक्षण संस्थानों में स्कूल, कॉलेज, कोचिंग सेंटर, विस्तार केंद्र (चाहे किसी भी नाम से हो) और विश्वविद्यालय आदि शामिल होंगे। वहीं प्रधान सचिव शिक्षा को निर्देश दिए हैं कि वे कोर्ट द्वारा निर्धारित विभिन्न बिंदुओं के आधार पर सूचना तैयार करवाकर सभी निजी*

■ शेष पृष्ठ 3 पर

23 सितंबर को दाखिल करनी है स्टेट्स रिपोर्ट

कोर्ट ने कमेटी गठित करने के अलावा एचपी प्राइवेट एजूकेशनल इंस्टीट्यूशन रेगुलेशन एक्ट,1997 के प्रावधानों की पूरे प्रदेश में अनुपालना करवाए जाने की स्टेट्स रिपोर्ट भी दाखिल करने को कहा है।

साथ ही इस रिपोर्ट में विशेष तौर पर निजी संस्थान के ढांचे, पीटीए व योग्य स्टाफ की जानकारी के अलावा रूल 6 के तहत अकाऊंट मेनटेन रखने और अन्य नियमों का पालन करवाए जाने और सरकार द्वारा सत्यापित फीस लिए

■ शेष पृष्ठ 3 पर

भ्रामक विज्ञापनों पर भी कोर्ट ने की सख्त टिप्पणी

इस मामले में कोर्ट ने अपने फैसले में निजी शिक्षण संस्थानों द्वारा छात्रों को फांसने के लिए दिए जाने वाले भ्रामक विज्ञापनों पर भी सख्त टिप्पणी की है। कोर्ट ने कहा कि निजी शिक्षण संस्थान कहीं आठ फेल होने पर दसवीं पास करने तो कहीं दसवीं फेल होने पर 12वीं पास करने के विज्ञापन समाचार पत्रों में देते हैं। वहीं निजी शिक्षण संस्थान सौ फीसदी प्लेसमेंट, एक्सिलेंट स्टॉफ, कैंपस में वाईफाई की मुफ्त सुविधा और मुफ्त

■ शेष पृष्ठ 3 पर

गायकी के शौकीनों के लिए स्मार्ट सिटी में गुंजन स्टूडियो तैयार

धर्मशाला : गायकों और गायकी के शौकीन लोगों के लिए 2003 से स्मार्ट सिटी धर्मशाला में चल रहे गुंजन संस्था के तत्वाधान से गुंजन स्टूडियो तैयार हो चुका है। संस्था के संयोजक विकास गुरुंग व प्रभु सिंह ने बताया कि हिमाचली लोकगीत और इससे जुड़ी संस्कृति को, जो विरासत कहीं न कहीं विलुप्त होने के कगार पर है उसे संजोने की कवायद में गुंजन संस्था की यह एक पहल है। गुंजन स्टूडियों क्षेत्र के कलाकारों, चाहे वे गायक हों या साज पर महारत हासिल करना चाहते हैं, उनके सपनों को साकार करने में मददगार साबित होगा। स्टूडियो में उभरते कलाकार अपने खुद के गाने रिकॉर्ड व प्रोफेशनली रिकॉर्ड कर सकते हैं। वहीं,

खुद की एलबम का सपना अब पूरा कर सकते हैं। साथ ही प्रभु सिंह ने बताया कि इसके तहत तपोवन रोड सिद्धबाड़ी गुंजन संस्था में गायन की कोचिंग की व्यवस्था भी है। जिसमें सप्ताह में तीन दिन म्यूजिक क्लास भी उपलब्ध है। स्टूडियो से जुड़ी जानकारी के लिए 94590-82624 संपर्क किया जा सकता है।

इंजीनियरिंग शिक्षा का टूटता तिलिस्म

भारतीय, खासकर मध्य वर्ग के लोग करियर के लिहाज से इंजीनियरिंग की पढ़ाई को सुरक्षित मानते हैं। यही वजह है कि इंजीनियरिंग के कोचिंग संस्थानों में भीड़ बढ़ती जा रही है। लेकिन पिछले दो वर्षों में जेईई के लिए आवेदन करने वाले छात्रों की संख्या कम हुई है। क्या यह इंजीनियरिंग की शिक्षा के प्रति मोहभंग को दर्शा रहा है?

ऐसा लगता है कि युवा अब शायद इंजीनियर बनने के सपने नहीं देख रहे, जो कुछ वर्षों पहले तक उनकी आंखों में पला करते थे। जिस सपने के लिए वे जीतोड़ मेहनत करते थे, उसे लेकर शायद अब उनका उत्साह ठंडा पड़ने लगा है। इंजीनियरिंग संस्थानों में दाखिले के लिए आयोजित जेईई परीक्षा में आवेदकों की संख्या पिछले दो वर्षों में लगातार घटी है। ऐसा इतिहास में पहली बार हुआ है।

जेईई भारत की कठिन परीक्षाओं में से एक मानी जाती है। यह दो हिस्सों में आयोजित की जाती है। इसमें हर साल दस लाख से ज्यादा छात्र शामिल होते हैं। मगर आंकड़े बताते हैं कि साल 2015 में पिछले वर्ष के मुकाबले करीब 55,000 छात्रों ने कम आवेदन किया, जबकि 2016 में 2015 की बनिस्बत लगभग 25,000 छात्रों ने कम फॉर्म भरे। हालांकि इससे पहले इसमें वृद्धि देखी गई थी। साल 2008 से हर साल जेईई परीक्षा के लिए आवेदन करने वाले छात्रों की संख्या 20,000 से लेकर 30,000 तक बढ़ती दिखी, मगर तस्वीर अब बदलने लगी है।

हालांकि शिक्षाविदों का कहना है कि ये आंकड़े सच्ची कहानी बयां नहीं कर रहे। यह संख्या तो आईआईटी संस्थानों में दाखिले का सपना देखने वाले आवेदकों का एक छोटा हिस्सा भर है। असल में यह समाज के नजरिये में आए बदलाव का एक आईना है। ऐसे शिक्षाविदों का मानना है कि युवा पीढ़ी अब अपने अभिभावकों के नक्शे-कदम पर चलने को तैयार नहीं और इंजीनियरिंग कोर्स से दूर भाग रही है, जबकि यह क्षेत्र लंबे समय से महत्वाकांक्षी मध्यवर्ग की नजर में सुरक्षित दांव माना जाता रहा है।

हालांकि दूसरा सच यह भी है कि इंजीनियरिंग डिग्री हासिल करने के बाद अब आमतौर पर नौकरियां भी आराम से नहीं मिलतीं। अगर मिलती भी हैं तो आय पहले के मुकाबले उतनी आकर्षक नहीं रही। नतीजतन छात्र इससे दूर भागने लगे हैं। दिल्ली के मॉडर्न स्कूल की पूर्व प्रधानाध्यापिका लता वैद्यनाथन का कहना है कि पारंपरिक राहों पर आगे बढ़ने की बजाय छात्र व अभिभावक अब ज्यादा से ज्यादा नए प्रयोग करना चाहते हैं।

इंजीनियरिंग कोर्सेज की ओर घटते रुझान ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय की भी चिंता बढ़ा दी है। मंत्रालय से जुड़े अधिकारियों का कहना है कि मंत्रालय इस मुद्दे पर चर्चा करने के लिए अगले महीने आईआईटी कौंसिल के साथ मीटिंग करने जा रहा है। संभव है कि इसमें इस बात की भी पड़ताल हो कि आखिर स्कूली शिक्षा में विज्ञान विषयों के प्रति छात्रों में अरुचि क्यों बढ़ रही है। स्कूलों में दाखिले से जुड़े आधिकारिक आंकड़े बताते हैं कि कक्षा 11 में विशुद्ध विज्ञान की बजाय मानविकी विषयों में ज्यादा छात्र दाखिला ले रहे हैं। शिक्षाविदों का मानना है कि ऐसा इसलिए हो रहा है, क्योंकि ज्यादातर छात्रों की रुचि अब अर्थशास्त्र और गणित जैसे विषयों की ओर बढ़ने लगी है, जो मानविकी के अंतर्गत आते हैं।

वैद्यनाथन इसकी वजह कुछ यूं बताती हैं। वह कहती हैं, 'जो छात्र बाद में एमबीए करना चाहते हैं, वे इंजीनियरिंग करके अपना अतिरिक्त एक वर्ष बर्बाद नहीं करना चाहते। ऐसे में वे इकोनॉमिक ऑनर्स या कुछ और कर सकते हैं। असल में आज छात्र पहले की तुलना में कहीं ज्यादा रचनात्मक हो गए हैं। उनमें जबर्दस्त उद्यमी कौशल होता है, जो विषयों के उनके चुनाव में भी साफ तौर पर दिखता है।' वैद्यनाथन के इन विचारों से भारतीय प्रबंधन संस्थान, कोलकात्ता के एक पूर्व छात्र भी पूरी तरह सहमत हैं। एमबीए करने से पहले उन्होंने दिल्ली स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग से ग्रेजुएशन किया था। वह कहते हैं, 'अगर मैंने इकोनॉमिक्स ऑनर्स करने के बाद एमबीए किया होता तो निश्चय ही मैं अपना एक साल बचा लेता। यह काफी बहुमूल्य समय होता है।' कोचिंग संस्थानों की राय कुछ जुदा है। वे मानते हैं कि छात्रों के घटते रुझान की वजह भारत में शिक्षा का गिरता स्तर है। देश में 3,000 से अधिक पंजीकृत तकनीकी संस्थान हैं, जिनसे हर साल करीब आठ लाख इंजीनियरों की फौज बाहर निकलती है। दक्षिण-पूर्वी राजस्थान के कोटा में एलेन इंस्टीट्यूट चलाने वाले नवीन माहेश्वरी कहते हैं, 'शुरुआत में इंजीनियरों को अच्छी नौकरी नहीं मिल रही। यहां आने वाले छात्रों की संख्या में भी कमी आई है।' हालांकि आईआईटी कौंसिल इस तर्क को सिरे से खारिज करती है। आईआईटी कौंसिल की स्थायी समिति के अध्यक्ष अशोक मिश्रा कहते हैं, 'इस परीक्षा में करीब 13 लाख छात्र भागीदारी करते हैं, लिहाजा इस मामूली गिरावट का यहां कोई मतलब नहीं है। इसके अलावा हमारे पास स्थानीय कॉलेज भी हैं, जहां छात्र दाखिला ले सकते हैं। वैसे, अगर छात्र मानविकी विषयों को चुन रहे हैं तो भला इसमें हर्ज क्या है? यह तो अच्छी बात है।'

बहरहाल, साल 2012 से जेईई परीक्षा दो भागों में आयोजित की जा रही है- मेन और एडवांस्ड। जेईई (मेन) में सफल होने के बाद छात्रों को केंद्र द्वारा वित्त-पोषित तकनीकी संस्थानों में दाखिला मिलता है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी और राज्य के इंस्टीट्यूट आदि ऐसे ही संस्थान हैं। वहीं जेईई (मेन) में सफल 1.5 से 2 लाख आवदेक ही जेईई (एडवांस्ड) में शामिल होने के योग्य माने जाते हैं। यह परीक्षा प्रतिष्ठित आईआईटी संस्थानों में दाखिले के लिए आयोजित की जाती है। इससे पहले, साल 2012 तक ऑल इंडिया इंजीनियरिंग एंट्रेंस एग्जामिनेशन और आईआईटी-जेईई अलग-अलग आयोजित किए जाते थे। मगर 2013 के बाद व्यवस्था बदल दी गई है और अब इस नए पैटर्न पर इंजीनियरिंग कोर्सेज के लिए छात्रों के दाखिले की दौड़ शुरू होती है। **दैहि**

आईआईटी: कुछ खास तथ्य

- सभी आईआईटी को मिला कर एक समय में 60 हजार से ज्यादा छात्र नामांकित होते हैं
- आईआईटी की डिग्रियों को एआईसीटीई की मान्यता की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि इन्हें विशेष दर्जा प्राप्त है
- केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री आईआईटी परिषद् के पदेन सभापति होते हैं

केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर का कहना है कि छात्रों को इनोवेशन और रिसर्च की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा, 'हमने गूगल, फेसबुक, ट्विटर, विंडोज और वॉट्सएप का आविष्कार नहीं किया, लेकिन कई भारतीय युवा इन सोशल एप को बनाने वाली टीम का हिस्सा थे।'

कोचिंग का बढ़ता कारोबार

बेहतर इंजीनियरिंग कॉलेजों में दाखिले के लिए कोचिंग का धंधा पिछले एक दशक में खूब बढ़ा है। दस वर्ष पहले यह व्यवसाय करीब 10 हजार करोड़ रुपये का माना गया था। साल 2013 में एसोचैम ने एक सर्वे करके अनुमान लगाया कि यह बढ़ कर 23.7 अरब डॉलर का हो गया है। अब यह कहा जा रहा है कि इंजीनियरिंग कोचिंग का धंधा 40 अरब डॉलर को भी पार कर गया है।

आईआईटी हैं पहली पसंद

साल 2015-16 की क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में आईआईटी-दिल्ली को दुनिया भर की यूनिवर्सिटी में 179वां स्थान मिला है। इतना ही नहीं, आईआईटी देश के प्रतिष्ठित संस्थान माने जाते हैं, लिहाजा छात्रों की पहली पसंद आईआईटी ही होते हैं। जेईई परीक्षा के माध्यम से इसमें दाखिला मिलता है। यह दो हिस्सों में होती है। जेईई एडवांस्ड में सफलता हासिल करने वाले छात्रों को ही आईआईटी में दाखिला मिलता है।

नौकरी के घटते अवसर

एस्पाइरिंग माइंड्स नेशनल इंप्लॉयबिलिटी रिपोर्ट के अनुसार, साल 2015 में देश भर के 650 से अधिक कॉलेजों से पास करीब 80 फीसदी ग्रेजुएट छात्र रोजगार के लायक नहीं थे। यह अध्ययन डेढ़ लाख से अधिक डिग्रीधारी छात्रों पर किया गया था। इसके अलावा भी ऐसी रिपोर्ट्स हैं, जो बताती हैं कि 90 फीसदी से अधिक इंजीनियरिंग छात्र अच्छी अंग्रेजी नहीं बोल पाते। जाहिर है, यह तस्वीर नए छात्रों को इंजीनियरिंग कोर्सेज से विमुख कर रही है।

जी-20 : एक-दूसरे को घूरने का मंच

पुरानी कहावत है, जाको पैर न फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई। भारत के पड़ोसी और दुनिया की दूसरी सबसे विशाल अर्थव्यवस्था चीन को अब पता चला कि आतंक से कोई भी अछूता नहीं है। इस सप्ताह चीन के हांग्जो में जी-2 शिखर सम्मेलन से ठीक पहले 30 अगस्त को किर्गिजस्तान की राजधानी बिशकेक में चीनी दूतावास में आत्मघाती विस्फोट ने चीन को सकते में डाल दिया था। चीन ने इस घटना की कड़ी भर्त्सना करते हुए आतंक फैलाने वाली की भी कड़ी निंदा की। पिछले करीब डेढ़ दशक से अमेरिका सरीखे ताकतवर देश समेत पूरी दुनिया आतंक से परेशान हैं। अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी समेत छोटे-बड़े सभी मिलकर आतंक से निपटने की वकालत करते रहे हैं, मगर चीन इस मुद्दे को अब तक टालता रहा है। इसकी प्रमुख वजह यही थी कि इस सदी के आरंभ तक चीन अपेक्षाकृत आतंक से अछूता रहा। अल-कायदा और इस्लामिक स्टेट जैसे खूंखार आतंकी संगठनों की चीन में घुसपैठ नहीं हो सकी हालांकि झिंजियांग प्रांत में उईघुर मुस्लिम अलगाववादियों का क्रूर चीनी दमन बदस्तूर जारी रहा। चीन की आत्म-केंद्रित राजनीतिक व्यवस्था आसानी से किसी बाहरी संगठन को अपने यहां घुसने की अनुमति नहीं देती थी।

पिछले एक दशक में चीन में काफी बदलाव आया है और चीन अब खासी उदार अर्थयवस्था बन कर उभरी है। जिस तरह पहले अमेरिका को छींक आने पर पूरी दुनिया को जुकाम हो जाता था, उसी तरह अब चीन में पत्ता हिलने पर दुनिया में भूंकप आ जाता है। समकालीन वैश्विक अर्थव्यवस्था में चीन की खासी उपस्थिति है। वर्ष 2013 के त्यानआनमेन चौक और 2014 के कुनमिंग हमले के बाद चीन ने आंतरिक चौकसी बढ़ा दी थी। दोनों आतंकी हमले उईघुर मुस्लिम अलगाववादियों द्वारा किए गए थे। इसके बाद से चीन में आतंकी हमले नहीं हुए मगर किर्गिज गणतंत्र के हमले ने चीन को भी आतंक का मिलकर मुकाबला करने के लिए विवश किया है। उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति इस्लाम करीमोव के निधन से भी क्षेत्रीय अस्थिरता का खतरा उत्पन्न हो गया है। चीन इससे सबसे ज्यादा प्रभावित हो सकता है। हांग्जो जी-20 शिखर सम्मेलन में पहली बार चीन ने भी माना कि आतंक दुनिया के लिए मंदी अथवा स्लोडाउन से भी बड़ी चुनौती है। चीन आतंक से भले ही उतना पीड़ित नहीं है, मगर पर्यावरण असंतुलन और ग्लोबल वार्मिंग के फलस्वरुप उपजी घनी धुंध ने चीन को खासा परेशान कर रखा है। बढ़ती आबादी के बाद घनी धुंध चीन की दूसरी बड़ी समस्या है।

बहरहाल हांग्जो जी-20 शिखर सम्मलेन की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि दुनिया के बीस ताकतवर देशों ने आतंक और ग्लोबल वार्मिंग को आर्थिक मोर्चे के लिए भी सबसे बड़ा खतरा माना है। वैश्विक अर्थव्यवस्था को तेजी से आगे बढ़ने के लिए जरुरी है कि दुनिया में पूरी तरह से अमन-चैन व्याप्त हो। भूखमरी, सूखे और महामारी से निपटने के लिए ग्लोबल वार्मिंग को रोकना अपरिहार्य है। हांग्जो में इन सब मुद्दों पर चर्चा हुई और आर्थिक विषमताओं को कम करने और आतंक से लड़ने के लिए मिलकर काम करने का संकल्प लिया गया। जलवायु परिवर्तन पर भी चर्चा हुई। चीन और अमेरिका ने पेरिस संधि पर हस्ताक्षर भी किए मगर वैश्विक आर्थिक समस्याओं से निपटने के लिए कोई कारगर उपाए नहीं सुझाए गए। इसके विपरीत शिखर सम्मेलन में अविश्वास और तनाव साफ-साफ नजर आया। अमेरिका के राष्ट्रपति ओबामा ने अपने रुसी समकक्ष पुतिन को जिस तरह से घुर कर देखा, उससे लगता नहीं कि जी-20 में किसी तरह की एकता है। भारत और चीन के बीच हाल ही में दूरियां बढ़ी हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने शिखर सम्मलेन में आतंक के पनाहगार पाकिस्तान पर हमला बोला तो चीन बगले झांकने लगा। ब्रिटेन की प्रधानमंत्री थेरेसा मे ने माइग्रेंट मुद्दे पर कड़ा रूख अपनाया। ऐसे माहौल में लफ्फाजी के सिवा किसी ठोस नतीजे की उम्मीद नहीं की जा सकती। -चंद्र शर्मा

आपके विचार आपके जीवन का निर्माण करते हैं, यहां संग्रह किए गए महान विचारकों के हजारों कथन आपके जीवन में एक सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

-महात्मा गांधी

पाठकों के लिए

विभिन्न सामाजिक, साहित्यिक एवं धार्मिक विषयों पर सभी प्रबुद्ध पाठकों के लेख, लघु कथाएं तथा कविताएं आमंत्रित हैं।

हमारा पता

संपादक,
चेंजिंग वेज, गुंजन भवन, तपोवन रोड वीपीओ सिद्धबाड़ी, धर्मशाला जिला कांगड़ा (हि.प्र.)-176057

Mail : badaltirahain@gmail.com

सीख

- जीवन एक गोल चक्र है। हम जो भी 14 वर्ष से 30 वर्ष की उम्र तक करते हैं, वे 31 वर्ष से ऊपर होने पर वापिस (ब्याज सहित) आना शुरु हो जाता है।
- मां-बाप से अच्छे दोस्त कोई नहीं होते और बच्चों से बढ़िया सच्चा मित्र कोई नहीं, जो हमें आईना दिखाते हैं।
- हमें सामान्य जिंदगी जीने के लिए नियम इतने भी सख्त नहीं बनाने चाहिए कि वे नियम हर रिश्ते को दूर कर दें।
- हमेशा भगवान की प्रार्थना के बाद आधा घंटा शांत रहें। इससे मन और घर दोनों को सुकून मिलेगा।
- खाना हमेशा पेट भरने के लिए खाया जाता है, ताकि हमारा शरीर काम कर सके।
- दुनिया में हर वस्तु, जो पैदा होती है, तैयार की जाती है, उत्पादित की जाती है उन सब का अंत निश्चित है, वे चाहे नई हो या पुरानी, बूढ़ी हो या जवान, ताजी हो या बासी। उसके लिए ज्यादा दुख क्यों?
- जिंदगी के दो पहलू हैं दुख और सुख। हमेशा दुख ही बड़ा लगता है, जबकि सुख ज्यादा होता है। दुख कम परंतु दुख में इतने दुखी होते हैं कि सुख नहीं भूलते। परंतु जब सुख होता है तो दुख को याद नहीं रखते, इसलिए वह कम महसूस होता है।

-रजनी कायस्था

जयपुर की शान जयगढ़ किला

जयगढ़ किला अरवल्ली रेंज के चील का टीला पर बना हुआ है। आमेर किले और मोटा सरोवर से इसे देखा जा सकता है। यह किला भारत के राजस्थान के जयपुर में आमेर के पास बना हुआ है। इस किले को 1726 में जय सिंह द्वितीय ने आमेर किले की सुरक्षा के लिए बनवाया था।

इस किले को आमेर किले के आकार में ही बनाया गया है और जयगढ़ किले को भी विजयी किले के नाम से ही जाना जाता है। उत्तर-दक्षिण से इसकी लम्बाई 3 किलोमीटर है। इस किले को जयवैन के नाम से भी जाना जाता है। देखा जाए तो इस किले में दुनिया की सबसे बड़ी तोप भी बनी हुई है। महल के कॉम्प्लेक्स में लक्ष्मी विलास, ललित मंदिर, विलास मंदिर और आराम मंदिर भी बना हुआ है और एक हथियार ग्रह और म्यूजियम भी बना हुआ है। जयगढ़ किला और आमेर किला एक ही कॉम्प्लेक्स से जुड़ा हुआ है।

■ जयगढ़ किला का इतिहास

प्राचीन समय में आमेर धुन्धर के नाम से जाना जाता था। आमेर के किले का उपयोग प्राचीन राजा और मीनाओ के काल में डेटिंग के लिये किया जाता था और यही किला आज जयगढ़ किले के नाम से जाना जाता है। वास्तव में यह किला आमेर किले की सुरक्षा के लिए बनाया गया था। किले में स्थित सागर तालाब में पानी को इकट्ठा करने की उचित व्यवस्था है। किले का निर्माण, सेना की सेवा के उद्देश्य से किया गया था जिसकी दीवारे लगभग 3 किमी के क्षेत्र में फैली हुई हैं। किले के शीर्ष पर एक विशाल तोप रखी है जिसे जयवैन कहा जाता है। इस तोप का वजन 50 टन है।

इस तोप में 8 मीटर लम्बे बैरल रखने की सुविधा है जो दुनिया भर में पाई जाने वाली तोपों के बीच सबसे ज्यादा प्रसिद्ध तोप है। किले के सबसे ऊंचे पॉइंट पर दिया बुर्ज है जो लगभग सात मंजिलो पर स्थित है। यहां से पूरे शहर का मनोरम दृश्य दिखाई देता है। जयगढ़ किला जयपुर के विख्यात पर्यटन स्थलों में से एक है। यह इगल्स के हील पर आमेर किले से 400 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। इस किले के दो प्रवेश द्वार है जिन्हें दंगुर दरवाजा और अवानी दरवाजा कहा जाता है जो क्रमश: दक्षिण और पूर्व दिशाओ पर बने हुए हैं। जयगढ़ किला महाराजा जय सिंह ने 18वीं सदी में बनवाया था। विद्याधर नाम के वास्तुकार ने इसका डिजाइन बनाया था और इस किले को जयपुर शहर की समृद्ध संस्कृति को दर्शाने के लिए बनवाया गया था। यह मुख्य रुप से राजाओं की आवासीय इमारत था लेकिन बाद में इसका इस्तेमाल शस्त्रागार के तौर किया जाने लगा। इतिहास और वास्तुकला जयगढ़ किले के पीछे एक समृद्ध इतिहास है। मुगल काल में जयगढ़ किला राजधानी से 150 मील दूर था और सामान की बहुतायत के कारण मुख्य तोप ढुलाई बन गया। यह हथियारों, गोला बारूद और युद्ध की अन्य जरुरी सामग्रियों के भंडार करने की जगह भी बन गया। इसकी देख-रेख दारा शिकोह करते थे। लेकिन औरंगजेब से हारने के बाद यह किला जय सिंह के शासन में आ गया और उन्होंने इसका पुनर्निमाण करवाया।

इस किले के इतिहास से जुड़ी एक और रोचक कहानी है। लोककथाओं के अनुसार शासकों ने इस किले की मिट्टी में एक बड़ा खजाना छुपाया था। हालांकि ऐसे खजाने को कभी बरामद नहीं किया जा सका। बनावट के हिसाब से यह किला बिलकुल अपने पड़ोसी किले आमेर किले के जैसा दिखता है जो कि इससे 400 मीटर नीचे स्थित है। इस किले की बाहरी दीवारें लाल बलुआ पत्थरों से बनी हैं और भीतरी लेआउट भी बहुत रोचक है। इसके केंद्र में एक खूबसूरत वर्गाकार बाग मौजूद है। इसमें बड़े-बड़े दरबार और हॉल हैं जिनमें पर्देदार खिड़कियां हैं। दो पुराने मंदिरों के कारण इस किले का आकर्षण और बढ़ जाता है, जिसमें से एक 10वीं सदी का राम हरिहर मंदिर और 12वीं सदी का काल भैरव मंदिर है।

पृष्ठ 1 के शेष

ऐसे तो काबू...

हिमाचल सरकार मामले में निजी शिक्षण संस्थानों की मनमानी रोकने और स्कूलों व अन्य शिक्षण संस्थानों से जुड़ी अहम जानकारी सार्वजनिक करने को अहम निर्णय सुनाया था। जस्टिस त्रिलोक सिंह चौहान की बैंच ने नियमों-कायदों को दरकिनार करके कुकुरमुत्तों की तरह फैले निजी शिक्षण संस्थानों द्वारा शिक्षा को व्यापार बनाने को लेकर सख्त टिप्पणियां की थीं। कोर्ट ने शिक्षा को समाज की रीढ़ बताते हुए इसे धन कमाने वाले व्यापारियों से बचाने के लिए अहम फैसला सुनाते हुए कुछ महत्वपूर्ण गाइडलाइन्स जारी की थीं। इसके तहत निजी शिक्षण संस्थानों चाहे वे स्कूल हों या चाहे निजी कॉलेज, विवि या अन्य संस्थान इनमें बिल्डिंग फंड, इन्फ्रास्टक्चर फंड और डिवेलपमेंट फंड के नाम पर वसूली को कोर्ट ने गैरकानूनी करार देते हुए इसे पूरी तरह बंद करने के आदेश दिए हैं। वहीं मनमानी फीस वसूली रोकने और अन्य प्रकार के कार्यों में पारदर्शिता लाने के लिए एक दर्जन के करीब बिंदुओं पर आधारित सूचना नोटिस बोर्ड के अलावा संस्थान, स्कूल या कॉलेज की वेबसाइट पर प्रदर्शित करने के आदेश दिए गए हैं।

भ्रामक विज्ञापनों पर...

ट्रांस्पोर्टेशन सुविधा के अलावा अन्य प्रकार के दावों के विज्ञापन जारी करके छात्रों को फांस लेते हैं और बाद में मनमानी फीस वसूलकर परेशान करते हैं। कोर्ट ने कहा कि यह सब कुछ सरकार की नाक के तले होता है, मगर आज तक इस पर अंकुश नहीं लगाया जा सका है। कोर्ट ने एचपी प्राइवेट एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस (रेगूलेशन एक्ट), 1997 की अनुपालना न किए जाने पर भी सरकार की खिंचाई की। साथ ही कहा कि सरकार की लापरवाही का पता इसी बात से चलता है कि इस एक्ट के पारित होने के छह साल बाद वर्ष 2003 में नियम बन पाए थे। इसके अलावा कोर्ट ने एचपी प्राइवेट एजूकेशनल इंस्टीट्यूशंस (रेगूलेशन कमीशन) एक्ट, 2010 के प्रावधान भी सख्ती से लागू करने के आदेश दिए हैं।

गैरकानूनी तरीके से अर्जित की जा रही संपत्ति

कोर्ट ने अपने फैसले में इस बात का भी जिक्र किया है कि निजी शिक्षण संस्थानों में मनमानी फीस व विभिन्न फंड्स के नाम पर गैरकानूनी तरीके से संपत्ति अर्जित की जा रही है। कोर्ट ने कहा है कि कोई भी निजी शिक्षण संस्थान कानून से ऊपर नहीं है। कोर्ट ने यह भी कहा है कि निजी शिक्षण संस्थानों को उनके हिस्से की स्वतंत्रता और लाभ कमाने का हक है, मगर संस्थान का ढांचागत विकास के लिए ऐसा करने की इजाजत नहीं दी जा सकती। निजी शिक्षण संस्थान बिजनेस अंपायर और बिजनेस विस्तार के लिए बिल्डिंग फंड इत्यादि गैरकानूनी तरीकों से फंड नहीं जुटा सकते। कोर्ट ने कहा है कि शिक्षा मुहैया करवाने के अलावा स्कूल का ढांचागत विकास करना स्कूल की जिम्मेवारी है। ऐसे में बिल्डिंग फंड के नाम पर फीस वसूली अनैतिक और अनुचित है।

आईसीएसई, सीबीएसई सहित अन्य संस्थान भी दायरे में

प्रदेश हाई कोर्ट के दायरे में केवल हिप्र. स्कूल शिक्षा बोर्ड या विश्वविद्यालयों से संबद्ध स्कूल या शिक्षण संस्थान ही नहीं बल्कि प्रदेश में चल रहे सीबीएई बोर्ड और आईसीएसई बोर्ड के निजी स्कूल भी आते हैं। उच्च शिक्षा उपनिदेशक केके गुप्ता ने इस बात की पुष्टि करते हुए कहा कि प्रदेश में चल रहे सीबीएसई और आईसीएसई बोर्ड के स्कूलों के अलावा अन्य सभी प्रकार के निजी शिक्षण संस्थानों को कोर्ट के इन आदेशों का पालन करना है। उन्होंने कहा कि इन सभी स्कूलों व संस्थानों का भी कमेटी द्वारा निरीक्षण किया जाएगा। साथ ही उन्होंने कहा कि अगर किसी को इन स्कूलों में अभी भी मनमानी किए जाने व कोर्ट के आदेशानुसार जानकारी सार्वजनिक न करने की शिकायत है, तो वह उनके कार्यालय को सूचित कर सकता है।

ये हैं कोर्ट के...

शिक्षण संस्थानों की वेबसाइड पर अपलोड करवाने की व्यवस्था करेंगे। साथ ही यह जानकारी संस्थान के नोटिस बोर्ड पर भी सार्वजनिक की जाएगी। वहीं जिला स्तर पर एक कमेटी का गठन करके इसे निजी शिक्षण संस्थानों की जांच करने को कहा जाएगा। इन्हीं आदेशों के तहत प्रदेश के सभी जिलों में इन कमेटियों का गठन कर लिया गया है और कोर्ट द्वारा तय जानकारी वेबसाइटों व नोटिस बोर्डों में दर्शाने के निर्देश जारी किए गए हैं।

23 सितंबर को दाखिल

जाने की जानकारी शामिल करने को कहा है। प्रदेश सरकार को यह रिपोर्ट 23 सितंबर, 2016 को दी गई अगली तारीख तक कोर्ट में रखनी है।

अभी स्कूलों ने नहीं भेजी लिखित सूचना

जिला कांगड़ा में इन आदेशों के क्रियान्वयन को लेकर जब उच्च शिक्षा उपनिदेशक केके गुप्ता से बात की गई, तो उन्होंने बताया कि कोर्ट के आदेशानुसार जिला स्तरीय जांच कमेटी गठित कर ली गई है। इसमें उनके अलावा, प्रारंभिक शिक्षा उपनिदेशक, प्रिंसिपल डाइट और दो एडीपीओ शामिल हैं।

उन्होंने बताया कि कमेटी ने अभी दो स्कूलों का निरीक्षण किया है। उन्होंने बताया कि जिला में 500 से अधिक निजी स्कूल हैं। सभी निजी शिक्षण संस्थानों को गाइडलाइन्स के अनुसार अपनी वेबसाइट बनाकर इसमें जानकारी अपलोड करने और नोटिसबोर्ड पर भी यह जानकारी लगाने के निर्देश दिए जा चुके हैं।

उन्होंने माना कि काफी सारे शिक्षण संस्थान होने के कारण सभी के निरीक्षण को काफी समय लगेगा। साथ ही उन्होंने यइ बात भी स्वीकार की है कि अभी तक किसी भी निजी स्कूल और अन्य प्रकार के शिक्षण संस्थान ने अभी तक आदेशों का पालन किए जाने को लेकर लिखित सूचना नहीं भेजी है। उन्होंने कहा कि अगर इन संस्थानों ने कोर्ट के आदेशों का पालन नहीं किया तो इन पर कोर्ट की अवमानना की कार्रवाई की जाएगी।

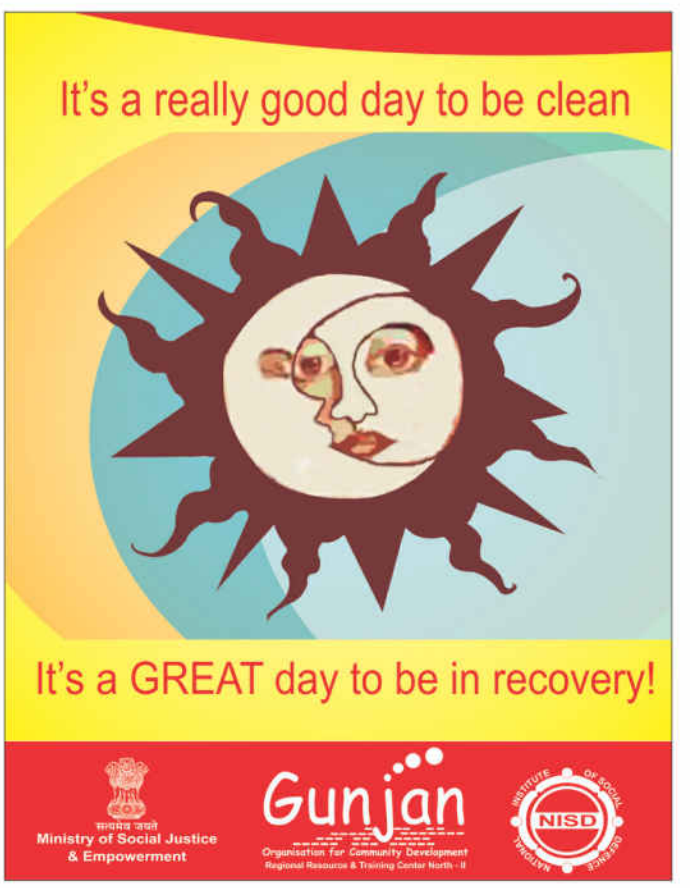

सेहतमंद रहने के लिए बॉडी मांगे मिनरल

विटामिन युक्त चीजें खाओ, इससे ताकत मिलेगी। विटामिन है ही ताकत का प्रतीक। ए, डी, सी, बी-12, के- हमारे शरीर को ये सब विटामिन चाहिए। मगर इनके साथ ही एक और महत्वपूर्ण तत्व है, जिस पर हम उतना गौर नहीं करते, जितना करना चाहिए। ये हैं मिनरल्स। हमारे शरीर के लिए मिनरल्स भी उतने ही जरूरी हैं, जितने कि विटामिन। हारमोन बनाना, मांसपेशियों का संकुचन (कांट्रेक्शन) नियंत्रित करना, शरीर का एसिड बैलेंस कायम रखना मिनरल्स का काम है। तो चलिए, कुछ मुख्य मिनरल्स के बारे में जानते हैं।

■ पोटेशियम

सोडियम के साथ मिलकर पोटेशियम एक इलेक्ट्रोलाइट का काम करता है, जिससे शरीर के फ्लूइड्स रेग्यूलेट होते हैं। यह रक्तचाप, हृदयगति, नर्व इम्पल्स को भी सुचारू

बनाए रखता है। पोटेशियम की कमी से मांसपेशियों की कमजोरी, जी मितलाना आदि हो सकता है। अपने भोजन में नारियल पानी, केला, दूध और इससे बने पदार्थ, मछली, दालें आदि शामिल करने से इसकी कमी नहीं होती।

■ मैग्नेशियम

यह तत्व मेटाबॉलिज्म, ब्लड शुगर को एनर्जी में बदलने, रक्तचाप और हृदयगति को सही बनाए रखने में मदद करता है। यह कैल्शियम के साथ मिलकर काम करता है। मैग्नेशियम की कमी से माइग्रेन, डिप्रेशन, मसल क्रैम्प्स आदि की समस्या हो सकती है। मैग्नेशियम पाने के लिए आपको भोजन में हरी सब्जियां, बादाम, होल ग्रेन, केला आदि शामिल करना चाहिए।

■ फॉस्फोरस

फॉस्फोरस हड्डियों में कैल्शियम फॉस्फेट के रूप में जमा होता है। दांतों और हड्डियों के स्वास्थ्य के लिए फॉस्फोरस जरूरी है। इसकी कमी से जोड़ों में जकड़न, थकान, हड्डियों में दर्द आदि हो सकता है। भोजन में फॉस्फोरस आपको दालों, नट्स, दूध, चीज, अंकुरित अनाज, मीट व फिश से मिल सकता है।

■ मैंग्नीज

मैंग्नीज की कमी से कमजोर याददाश्त, पाचन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। मैंग्नीज आपको अनाज, दालों, मटर, चाय, कॉफी, किशमिश आदि से मिल सकता है।

■ जिंक

अच्छी रोग प्रतिरोधक क्षमता यानी इम्यून सिस्टम के लिए जिंक एक जरूरी तत्व है। यह आपके बालों, त्वचा, नाखूनों को भी पोषण प्रदान करता है। गर्भावस्था के समय यह खास तौर पर लाभकारी होता है। पुरुषों को भी अच्छे स्पर्म के लिए जिंक लाभदायक मिनरल है। जिंक की कमी हो, तो सर्दी-जुकाम आदि भी जल्दी हो जाता है। भोजन में जिंक आपको साबुत अनाज, दूध, फलियों, सी-फूड, दालों, तिल आदि से मिलता है।

■ सल्फर

शरीर में प्रोटीन के निर्माण के लिए सल्फर जरूरी है। यह एंटी-एजिंग है, त्वचा को मुलायम और चमकता हुआ रखने में सहायक है। यह शरीर की कोशिकाओं की धूप, प्रदूषण आदि से भी रक्षा करता है। भोजन में सल्फर आपको गोभी, दूध व इससे बने पदार्थों, बादाम, अखरोट, अंडों, फिश आदि से मिलता है।

■ कोबॉल्ट

अच्छे पाचन और नर्व फंक्शन के लिए इस मिनरल की जरूरत होती है। विटामिन बी-12 के अवशोषण के लिए भी यह जरूरी होता है। कोबॉल्ट की कमी से आंखों की तकलीफें, याददाश्त की कमी, सिर चकराना आदि तकलीफें हो सकती हैं। भोजन में कोबॉल्ट दूध व रेड मीट से मिलता है।

जानें क्यों खुश नहीं हैं टीनेजर्स

लंदन। शहर में टीनेजर्स को लेकर हाल ही में एक सर्वे किया गया। इसमें कई चौंकाने वाली बातें सामने आई हैं। 10 से 15 साल की उम्र की लगभग 7 लाख लड़कियों पर उनकी लाइफ स्टाइल पर सर्वे किया गया। गुड चाइल्डहुड 2016 की रिपोर्ट्स की माने तो अब अपने पहनावे और दिखावट को लेकर लड़कियां पहले से ज्यादा नाखुश हैं। वहीं जेंडर गैप जैसा सामाजिक मुद्दा भी उनके बीच चर्चा का विषय बना हुआ है।

वहीं यूके की एक तिहाई से ज्यादा लड़कियां अपने लुक्स को लेकर नाखुश हैं। गौरतलब है कि खुद से संतुष्ट न होने का ये आंकड़ा पिछले 5 साल में लगभग 30 फीसदी तक बढ़ा है। हालांकि लड़के इस मामले में अपने बारे में अब भी वहीं राय रखते हैं। लुक्स और अपने दिखावट को लेकर पहले की ही तरह 20 फीसदी लड़के संतुष्ट नहीं हैं। अपनी जिंदगी से नाखुश लड़कों की भी संख्या में कोई बदलाव नहीं आया है। ताजा सर्वे के मुताबिक 11 फीसदी लड़के आज भी ऐसे हैं जो ये मानते है कि वो बदतर जिंदगी गुजार रहे हैं। वहीं ऐसी लड़कियों की संख्या में आश्चर्यजनक रूप से 3 प्रतिशत का बदलाव देखने को मिला। पहले जहां नीरस जीवन बीताने वाली लड़कियों की हिस्सा 11 प्रतिशत था, वो अब बढ़कर 14 प्रतिशत हो गया है।

दबाव झेलती हैं लड़कियां

सर्वे में भाग लेने वाली एक टीनेज लड़की के अनुसार, आज की नौजवान पीढ़ी को परिवार और वरिष्ठ परिजनों का अतिरिक्त दबाव झेलना होता है। आपके दोस्त और परिवार के लोग हर उस घड़ी, मौके पर आपसे सबसे बेहतर प्रदर्शन ही चाहते है।

सोशल मीडिया कितना जिम्मेदार

इस चौंकाने वाली रिपोर्ट के पीछे विशेषज्ञ सोशल मीडिया को भी जिम्मेदार ठहराने से नहीं चूक रहे। विशेषज्ञों के अनुसार-टीनेजर्स की ऐसी सोच की असल वजह सोशल नेटवर्किंग साइट्स हैं। सोशल मीडिया ने ही नौजवान लड़कियों के रहन-सहन और पहनावे पर असर डाला है। लाइक्स और शेयर के फेर में नौजवान जिंदगी बर्बाद कर रहे हैं। लड़कियां अब पर्सनैलिटि ग्रुमिंग और अपने दिखावट में ज्यादा ध्यान दे रही हैं। नतीजतन टीनेजर्स में बेहतर दिखने की होड़ लगी हुई है।

ऐप जो करवाएगा मनपसंद लोगों से दोस्ती

इस भागदौड़ भरी जिंदगी में हम रोजाना कई लोगों से टकराते है, जिनसे हमारी लगभग रोजाना मुलाकात भी होती है। उनमें से कुछ लोगों की खूबसूरती या व्यक्तित्व से हम काफी प्रभावित हो जाते हैं और अक्सर सोचते हैं कि काश इससे एक बार बात हो जाती। लेकिन, अब चिंता करने की जरूरत नहीं है क्योंकि मार्केट में एक ऐसा मोबाइल ऐप आया है जो आपके मनपसंद लोगों से आपकी दोस्ती करा देगा। हिटवी ऐप के नाम के इस ऐप को आप गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड कर सकते हैं। कंपनी का मकसद ऐप लॉन्च करके आपको ऐसे लोगों से मिलवाना है, जिनसे आप मिलना चाहते हैं, लेकिन मिल नहीं पाते।

ऐसे काम करता है Hitwe ऐप

- यह ऐप आप फ्री में डाउनलोड कर सकते हैं, इसके लिए गूगल आपसे कोई चार्ज नहीं लेता
- ऐप डाउनलोड करते ही आपके मोबाइल पर एक मैसेज आएगा, जिसे एक्टिवेट करने के बाद आप इस ऐप का आनंद उठा सकते हैं।
- आपके मोबाइल पर हिटवी ऐप डाउनलोड होते ही आप जिस इलाके में हैं, उस लोकेशन को ट्रैक करना शुरू कर देगा।
- जिस लोकेशन पर आप रेग्युलर विजिट करते हैं, वहां के आसपास के लोगों की प्रोफाइल आपके मोबाइल स्क्रीन पर आने लगेगी।
- बस इसमें एक बात है कि जिनके बारे में आप जानना चाहते है, उनके मोबाइल में भी हिटवी ऐप होना चाहिए।
- जैसे आप गूगल मैप से कोई लोकेशन ढूंढते हैं, इस ऐप के जरिए ठीक उसी तरह आप अपने मनचाहे इंसान को भी ढूंढ पाएंगे।
- आप इनमें से देख सकते हैं, कि वो कौन है जिससे आप बात करना चाहते हैं।
- उसके प्रोफाइल चेक करने के बाद आप उसे लाइक कर दें।
- लाइक करने के बाद उनके पास आपकी फ्रेंड रिक्वेस्ट चली जाएगी।
- ऐसा कर आप अपने पसंदीदा लड़के या लड़की से दोस्ती कर सकेंगे।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादक : संदीप परमार द्वारा वीपीओ सिद्धवाड़ी, तहसील धर्मशाला, जिला कांगड़ा-176057, हिप्र से प्रकाशित एवं इम्पीरियल प्रिंटिंग प्रेस, गुरुद्वारा रोड धर्मशाला से मुद्रित। फोन नंबर : 01892-235315 Mail : badaltirahain@gmail.com